इकाई 18 राष्ट्र-राज्यों का निर्माण-2: जर्मनी और इटली

इकाई की रूपरेखा

18.0 उद्देश्य

इस खंड की पिछली इकाइयों में आप राष्ट्रवाद के विचारों के विकास और राष्ट्र-राज्यों के उदय का अध्ययन कर चुके हैं। आप यह भी पढ़ चुके हैं कि 16वीं और 17वीं शताब्दियों के दौरान ब्रिटेन और फ्रांस में राष्ट्र-राज्यों का निर्माण कैसे हुआ। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- जर्मन राष्ट्रीय विचारों के विकास का विवेचन कर सकेंगे;
- जर्मन राष्ट्रवाद की राजनैतिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से परिचित हो सकेंगे;
- इतालवी राष्ट्रवाद की राजनैतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पृष्ठभूमि की चर्चा कर सकेंगे; और
- राष्ट्र-राज्यों के निर्माण में युद्ध और जन संगठनों की भूमिका पर विचार कर सकेंगे।

18.1 प्रस्तावना

जैसा कि आप पिछली इकाइयों में पढ़ चुके हैं ब्रिटेन और फ्रांस जैसे पुराने राज्यों में ऐतिहासिक परिस्थितियों द्वारा निर्मित राज्य की सीमाओं के भीतर ही राष्ट्रवाद का विकास हुआ। फ्रांसीसी क्रांति ने ही न केवल प्रजातंत्र की बल्कि उस राष्ट्रवाद के आदर्श का भी निर्माण किया जिसमें राष्ट्र को 'एक' और 'अविभाज्य' माना गया। जर्मनी और इटली में जर्मन और इतालवी भाषा भाषी लोगों के बीच राजनैतिक और क्षेत्रीय एकता न होने के कारण सबसे पहले राष्ट्रीय एकीकरण की आवश्यकता हुई। इसलिए जर्मन और इतालवी राष्ट्रवाद का इतिहास जर्मन और इतालवी भाषा भाषी लोगों का एक राष्ट्र-राज्य के रूप में एकीकृत होने के संघर्ष का इतिहास है। इन दो प्रमुख राज्यों में राष्ट्रवाद का इतिहास ऐसे राजनैतिक आंदोलनों और सांस्कृतिक परिवेश की कहानी है जिसमें घरेलू असंतोष और राजनैतिक विभेदीकरण को दूर कर तथा अंतरराष्ट्रीय कूटनीति और युद्ध के द्वारा भी राष्ट्र-राज्य का निर्माण किया गया। जर्मनी और इटली में, 19वीं शताब्दी के मध्य में घरेलू स्तर पर आर्थिक और राजनैतिक एकीकरण की प्रक्रिया द्वारा राष्ट्र-राज्य की एकता कायम की गई। परंतु अंततः घरेलू प्रतिद्वंद्वियों और अंतरराष्ट्रीय शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए सेना की मदद लेनी पड़ी। वस्तुतः 19वीं शताब्दी के मध्य में राष्ट्र-राज्यों के निर्माण में प्रशा और पिडमौंट-सार्डिनिया ने पहल की और उन्होंने कुशल कूटनीति द्वारा तथा युंद्ध लड़कर राष्ट्रीय एकता कायम की तथा दूसरी ओर जनता की राष्ट्रीय भावनाओं और कभी-कभार उभरे क्रांतिकारी उभारों का बड़ी ही कुशलता से उपयोग किया।

18.2 जर्मन राष्ट्रवाद

फ्रांसीसी क्रांति और नेपोलियन की सेना द्वारा होली रोमन साम्राज्य को नष्ट किए जाने से यूरोप और जर्मन राज्यों के राजनैतिक मानचित्र के हुए सरलीकरण से लगभग 18वीं शताब्दी के अंत में आधुनिक जर्मन राष्ट्रवाद का मार्ग प्रशस्त हुआ। हालांकि आधुनिक राष्ट्रवाद का संबंध पूंजीवाद और बुर्जुआ उदारवाद के उदय के साथ जोड़ा जाता है जिसमें राष्ट्रों की भाषाई या जातीय परिभाषा निर्धारित की गई परंतु राष्ट्रवाद की शुरुआत काफी पहले हो चुकी थी।

18.2.1 जर्मन राष्ट्रीय विचार

आरंभिक मध्य काल के दौरान टकराव और मेल की प्रक्रिया द्वारा कई जर्मन कबीले और सेल्ट तथा स्लाव एक सूत्र में पिरो दिए गए और उन्हें जर्मन माना जाने लगा। 19वीं शताब्दी के बाद से इस्टर्न फ्रैंक्स के साम्राज्य में रहने वाले बड़े कबीलों को 'जर्मन' के रूप में जाना गया। रोमन और स्लावियाई भाषा समूहों से इन्हें अलग चिन्हित करने के लिए ऐसा किया गया।

1000 ई. के बाद जर्मन शब्द का विस्तार हुआ और यह जर्मन राष्ट्र की जातीयता का प्रतीक बन गया। जर्मन राष्ट्र का इतिहास प्रथम सहस्राब्दी के उत्तरार्ध में आरंभिक सामंती युग से शुरू होता है। मध्य काल में राष्ट्रीय भावना के कुछ ज्यादा प्रमाण नहीं मिलते हैं। हालांकि कुछ इतिहासकारों ने बड़े राजतंत्रीय राज्यों में सामंती राष्ट्रवाद का विकास दिखाया है। मध्यकालीन शाही विचार, जिस पर जर्मन साम्राज्य आधारित था, एक सार्वभौम विचार था और इस अवधि में पूरब में जर्मन औपनिवेशीकरण और आक्रमण धार्मिक उद्देश्यों से नियंत्रित होते थे।

8वीं और 9वीं शताब्दी में जर्मन भाषा के लिए *ड्यूश* शब्द का इस्तेमाल किया गया। 11वीं शताब्दी में जाकर *ड्यूश* शब्द का इस्तेमाल जर्मन भाषी समूहों और उनके क्षेत्रों के लिए किया जाने लगा। यहां तक कि पूर्व और उत्तर-पूर्व के जर्मन औपनिवेशीकरण को आगे बढ़ाने वाला ट्यूटॉनिक ऑडर का चार्टर भी किसी प्रकार की जर्मन राष्ट्रीय चेतना नहीं जगा सका। यहां तक कि सैक्सन, फ्रैंक, बवोरियाई, स्वाबियाई जैसी जर्मन प्रजातियों में जब आपस में खून के रिश्ते से जुड़ने की भावना पनपने लगीं थीं उस समय भी उनमें जर्मन होने की चेतना नहीं थी। जर्मन पुनर्जागरण के रचनाकारों के राष्ट्रवाद ने एक नई चेतना पैदा की, वह 1455 में प्राप्त टैसीटस जर्मेनिया की पांडुलिपि पर आधारित थी। इस चेतना को इसाई धर्म और रोमन लोगों से भी

पुराना और श्रेष्ठ समझा गया। लूथरवाद और जर्मन राष्ट्रवाद के उदय के बीच क्षीण संबंध था क्योंकि उनका संघर्ष मुख्य रूप से रोम में कैथोलिकवाद के खिलाफ था जिसे वे ईसा-विरोधी मानते थे और यह लूथरवाद राष्ट्रीय मुद्दों तक सीमित नहीं था। प्रोटेस्टेंटों द्वारा बाइबल के जर्मन भाषा में अनुवाद से आधुनिक जर्मन का तो विकास हुआ परंतु जर्मन राष्ट्रवाद का विकास वस्तुतः जर्मन स्वछंदतावाद के साथ शुरू हुआ। जर्मनी में पुनर्जागरण और धर्म सुधार आंदोलन मुख्यतः विद्वानों और धर्मशास्त्रियों तक सीमित थे। अतः पश्चिमी यूरोपीय देशों की तरह राजनीति और समाज को या विश्व साम्राज्य के मध्ययुगीन विचार को समाप्त करने में ये आंदोलन असफल रहे। जर्मन राष्ट्रवाद 18वीं शताब्दी में शुरू हुआ और समुदाय का 'प्राकृतिक' गठजोड़ तथा सगोत्रता इसका आधार बना; यह किसी अनुबंध या नागरिकता की अवधारणा पर आधारित नहीं था। जर्मन राष्ट्रवाद 'लोक' की अनिश्चित अवधारणा पर आधारित था जिसे पहली बार जर्मन मानवतावादियों ने विकसित किया था। हर्डर और जर्मन स्वछंदतावाद ने जर्मन *फोक* की अवधारणा को और भी स्पष्ट किया। रूसियों की तरह जर्मन राष्ट्रवाद भी राष्ट्र की 'आत्मा' या 'लक्ष्य' से पूर्वाग्रह ग्रस्त था क्योंकि इसका संबंध सामाजिक और राजनैतिक यथार्थ से नहीं था और नीति निर्माण तथा सरकार की अपेक्षा शिक्षा और अधिप्रचार के द्वारा इसका माहौल बनाया गया था।

मार्टिन लूथर द्वार पोप की सत्ता को अस्वीकार किए जाने से राष्ट्रीय चेतना का आधार निर्मित हुआ। 1486 में पहली बार जर्मन राष्ट्र के लिए पवित्र रोमन साम्राज्य अभिव्यक्ति का प्रयोग किया गया और 16वीं शताब्दी में इसका आम प्रयोग होने लगा। सबसे पहले लूथर, उलरिख वोन हटेन और मानवतावादियों ने 'जर्मन राष्ट्र' शब्द का प्रयोग किया। हालांकि जर्मन स्वछंदतावादियों और बुद्धिजीवियों ने 'सांस्कृतिक राष्ट्र' (कल्चर नेशन) की अवधारणा के आधार पर राष्ट्रवाद की जातीय और भाषाई परिभाषा विकसित की परंतु राष्ट्र-राज्य के निर्माण की वास्तविक प्रक्रिया जटिल ऐतिहासिक वास्तविकताओं से होकर गुजरी जिसका उल्लेख हम बाद में करेंगे।

18.2.2 राजनैतिक पृष्ठभूमि

नोपोलियन के युद्धों की समाप्ति के समय जर्मनी का राजनैतिक विखंडीकरण अंशतः समाप्त हुआ। होली रोमन साम्राज्य की समाप्ति के बाद संप्रभु जर्मन राज्यों की संख्या 300 से घटकर 38 हो गई। प्रत्येक जर्मन राज्य की स्वतंत्रता और संप्रभुता को कायम रखने के लिए 1815 में जर्मन संघ (Bund) की स्थापना हुई। वियेना कांग्रेस (सम्मेलन) के बाद यूरोपीय व्यवस्था का निर्माण हुआ। इस व्यवस्था का निर्माण आस्ट्रिया, प्रशा और रूस के संकीर्णवादी राजतंत्रों द्वारा किया गया था जिनका उद्देश्य यूरोप में जनतांत्रिक बिचार के प्रसार को नियंत्रित करना था। इस नीति के प्रमुख निर्माता आस्ट्रिया के चांसलर प्रिंस मेटरनिख ने 1820 और 30 के बीच जनतांत्रिक विचारों और आंदोलनों तथा शाही सत्ता को दी गई चुनौतियों को दबाने में सक्रिय भूमिका निभाई।

19वीं शताब्दी में जर्मनी का राजनैतिक एकीकरण कठिन था क्योंकि संकीर्णवादी शासक उदारवादी विचारों के खिलाफ थे। 1815 के बाद जर्मन राज्यों में प्रातिनिधिक संस्थाओं की स्थापना की गई और उन्हें काफी सीमित अधिकार दिए गए। 1848 के बाद अधिकांश जर्मन राज्यों में जनतांत्रिक सुधार लागू किए गए। प्रशा में सुधार की गति धीमी थी क्योंकि मत देने का अधिकार तीन प्रकार के आयकर दाताओं को समान रूप से प्रदान किया गया। यह विभाजन आयकर देने के परिमाण पर आधारित था। समृद्ध अल्पसंख्यक एक तिहाई आयकर देते थे। अतः प्रशा की विधाई संस्थाओं में उन्हें एक तिहाई मत देने का अधिकार प्राप्त था। प्रशा में प्रतिनिधित्व की यह व्यवस्था 1918 तक जारी रही और इसने एक पिछड़ी राजनैतिक व्यवस्था को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

जर्मन एकीकरण की प्रक्रिया युद्ध और सैनिक प्रयत्नों से प्रभावित हुई। सबसे बड़े जर्मन राज्य प्रशा ने इस प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाई। यदि प्रशा और आस्ट्रिया ने समय पर सेना न भेजी होती तो हेसे-कैसल, ब्रानशेविग और सैक्सोनी जैसे छोटे जर्मन राज्य 1830 के क्रांतिकारी विप्लवों में धाराशाई हो जाते। 1848-49 में एक बार फिर प्रशा और आस्ट्रिया ने जन आंदोलनों को दबाने के लिए सैन्य शक्ति का उपयोग किया।

डेनमार्क के खिलाफ लड़ाई लड़कर स्लेश-विग, हौल्सटीन को जर्मन संघ में शामिल कर लिया गया। 1866 के आस्ट्रिया-प्रशा युद्ध में आस्ट्रिया की हार के बाद उत्तरी जर्मन संघ का निर्माण हुआ। 1870-71 के फ्रांसीसी-जर्मन युद्ध में फ्रांस की हार के बाद शाही जर्मन सरकार की स्थापना हुई। वयस्क मतदान के आधार पर एक राइखस्टैग या राष्ट्रीय संसद का चुनाव किया गया और संघीय परिषद या बंड्सरैट में शामिल 25 जर्मन राज्यों के प्रतिनिधियों को शाही जर्मनी की नीति बनानी थी। प्रशा का राजा जर्मनी का सम्राट बना और जर्मन सेना और उसका नियंत्रण स्थापित हुआ तथा राइख का चांसलर भी प्रशियन ही बना। शाही राइख ब्रिटेन की तरह एकीकृत राज्य या फ्रांस की तरह केंद्रीकृत राज्य नहीं था। संघीय परिषद या बंड्सरैट में प्रशावासियों की संख्या सबसे अधिक थी परंतु वे बहुमत में नहीं थे। शाही राइख में बवेरिया और बर्टिमबर्ग को शामिल करने के लिए उन्हें कुछ रियायतें दी गई थी। जर्मन राइख को संघ में शामिल होने वाले राज्य या लैंडर और कम्यून या जैमेडेंन के साथ संसाधनों का बंटवारा करना पड़ता था और इसका उपभोग जो 1875-79 में कुल सार्वजनिक उपभोग के 46 % था, 1910-13 में घटकर 36 % रह गया । जर्मन राष्ट्रीय एकीकरण की प्रक्रिया का निर्धारण प्रशा के संकीर्णवाद और सैन्यवाद द्वारा हुआ परंतु शाही राइख के तहत केंद्रीकरण की प्रक्रिया स्थानीय और अपकेंद्री शक्तियों द्वारा प्रभावित हुई।

18.2.3 आर्थिक पृष्ठभूमि

ब्रिटेन की तुलना में जर्मनी का सापेक्षिक पिछड़ापन और ब्रिटिश प्रतियोगिता का सामना करने की आकांक्षा ने बुर्जुआ विचारधारा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की और कुछ हद तक बुर्जुआ और जंकर हितों, जर्मन राज्यों और खासकर प्रशा की नीतियों के बीच संतुलन स्थापित किया। हालांकि कृषि अभी भी अर्थव्यवस्था का प्रमुख स्रोत था परंतु 1833 में सीमा शुल्क संघ या जॉल्वेरियन की स्थापना के बाद 1830 के दशक में कपड़ा उद्योग में महत्वपूर्ण विकास हुआ। 1840 के दशक में औद्योगिक विकास हुआ और रेलवे में निवेश किया गया। 1846-47 में खराब फसल होने और 1848-49 की क्रांतियों के कारण रेलवे आधारित प्रगति में बाधा पड़ी। जर्मन औद्योगीकरण की शुरुआत की अवधि में 1850-1873 के दौरान कोयला, लोहा और रेलवे पर आधारित भारी उद्योगों का विकास हुआ। 1870-73 में जर्मनी के एकीकरण के बाद एक आर्थिक उछाल आया। इसके बाद 1873-95 के दौरान मंदी आने से संकट पैदा हुआ। 1850-74 की अवधि के दौरान कुल उत्पाद 2.5% प्रतिवर्ष की दर से, कुल उत्पाद प्रति व्यक्ति 1.7 % की दर से और औद्योगिक रोजगार 1.6% की दर से बढ़ा। 1875-91 की अवधि में यह वृद्धि क्रमशः प्रतिवर्ष 1.9%, 1.0% और 2.3% थी।

जर्मन और खासकर प्रशा के औद्योगीकरण में रेलवे ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1850 के दशक में प्रशा में लोहा और कोयला क्षेत्रों में विशेष प्रगति हुई। रेलवे निर्माण के लिए घरेलू लोहे और कोयले का इस्तेमाल किया गया और इस प्रकार ब्रिटिश और बेल्जियन आपूर्ति पर इसे निर्भर नहीं रहना पड़ा। 1870 के दशक के आरंभ में रूर कोयला क्षेत्र के अध्ययन से यह पता चलता है कि लोहा उद्योग के कुल उत्पादन के आधे हिस्से का उपयोग रेलवे करता था जबकि लोहा उद्योग रूर से निकाले गए कोयले के एक तिहाई हिस्से का उपयोग करता था। इसके अलावा रेलवे को एक चौथाई माल भाड़ा कोयला उद्योग से ही प्राप्त होता था। रेलवे ने जर्मन अर्थव्यवस्था को एकीकृत करने और आर्थिक प्रगति को तेज करने में मदद की। ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका के रेलवे के विपरीत जर्मन रेलवे ने लोहा और कोयला उद्योगों की मांगों में काफी अंतर पैदा किया।

हालांकि जॉल्वेरिन और रेलवे के तीव्र विकास के कारण जर्मन उद्योग में तीव्र प्रगति हुई परंतु जर्मन एकीकरण की प्रक्रिया को प्रभावित करने की दृष्टि से औद्योगिक प्रगति पर्याप्त मजबूत नहीं थी। हालांकि प्रशा में 1816-22 और 1840-49 के बीच निवेश लगभग 51% था, 1851-1860 और 1881-90 के बीच पूरी जर्मनी में इसमें 200% से ज्यादा की वृद्धि हुई। हालांकि जर्मन औद्योगीकरण को फ्रेडरिक लीस्ट की आर्थिक संरक्षणवाद की नीति के अनुकूल होना था, पर एकीकरण के काफी बाद 1879 में उच्च सीमा शुल्क लगाया गया। 19वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में संरक्षणवाद तेजी से बढ़ा और उद्योगपतियों और भूमिपतियों के बीच संधि हुई। जर्मन औद्योगिक वर्ग इतना बड़ा या अर्थव्यवस्था में इतना महत्वपूर्ण नहीं था कि वह जर्मन राजनीति, चाहे वह एकीकरण हो या उदारवादी जनतंत्र हो, में निर्णायक भूमिका अदा कर सके।

19वीं शताब्दी के दौरान जर्मन बुर्जुआ वर्ग का तेजी से विकास हुआ और इसके फलस्वरूप 1800-1830 के बीच उदारवाद के आरंभिक युग में उत्पादन प्रणाली के स्थान पर औद्योगिक क्रांति की कारखाना प्रणाली की स्थापना हुई। खराब प्रबंधन और अपेक्षाकृत अविकसित और राजनैतिक दृष्टि से विभाजित बाजारों के कारण कई समस्याएं पैदा हुईं और कई उद्यम 1800-1830 के बीच दिवालिए हो गए। पूर्व औद्योगिक काल और औद्योगिक क्रांति के बीच केवल इसी सीमित अर्थव्यवस्था में निरंतरता थी कि व्यापारिक संस्थाओं और उनके निवेशकों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। बुर्जुआ समूहों ने परिवहन और औद्योगिक विकास की मांग के लिए आर्थिक प्रगति का जो रास्ता अख्तियार किया वह 1848 के पहले ही पितृभूमि के लिए उद्योग के संदेश से जुड़ गया। प्रशा में 1820 के बाद सार्वजनिक औद्योगिक और तकनीकी विद्यालयों ने राष्ट्रीय राजनैतिक कारणों से उद्योग को बढ़ावा दिया। उदारवादी उद्यमियों ने पितृभूमि के लिए उद्योग के मुद्दे को 1848 के पहले राजनैतिक एकता की अपेक्षाओं के साथ जोड़ दिया। 1850 और 1860 के दशक के इंजीनियरिंग संगठनों ने इन विचारों को और आगे बढ़ाया। जर्मनी में औद्योगिक क्रांति से संबंधित कुछ प्रमुख राजनैतिक निर्णय ऐसे वर्ग द्वारा लिए गए जो आत्मविश्वास से भरा हुआ संगठित और प्रगतिशील बुर्जुआ वर्ग था। कैम्पहाउसेन, सिमेन्स, हैन्समैन, लिस्ट और हरकोर्ट जर्मन उद्यमी थे जिनका मानना था कि वे "एक राष्ट्रीय सभ्यता अभियान" के एक हिस्से थे।

अन्य स्रोतों से यह पता चलता है कि राज्य और प्रगतिवादी बुर्जुआ वर्ग, जिन्होंने "प्रतिनिधि बुर्जुआ वर्ग" की भूमिका निभाई थी, का केंद्रीय और महत्वपूर्ण योगदान था। 19वीं शताब्दी के मध्य में भौतिक और नैतिक प्रगति के विचार ने बुर्जुआ-व्यापारी, अधिकारी और पेशेवर लोगों के विभिन्न समुदायों को एक साथ लाने में मदद की। ब्लैकबॉर्न के अनुसार 1850 और 1860 के दशकों में जर्मनी में हुए परिवर्तन के फलस्वरूप एक चीखने चिल्लाने और आत्म प्रशंसा करने वाला बुर्जुआ वर्ग पैदा हुआ जिन्हें 'नव धनाढ्य वर्ग' कहा जा सकता था। एंगेल्स का मानना था कि ब्रिटेन में एक बुर्जुआ वर्ग था, बुर्जुआ कुलीनतंत्र था और एक बुर्जुआ मजदूर वर्ग था। मैक्स वेबर का मानना था कि जर्मनी में नव धनाढ्य बुर्जुआ वर्ग, कुलीनतंत्र और मजदूर वर्ग था। नई व्यवस्था में आए तीव्र बदलाव के कारण बुर्जुआ वर्ग में एक उग्रता आ गई जिसके कारण 'पूरे समाज में एक खास स्थिति प्राप्त करने के लिए नव धनाढ्यों के दावे अपनी ऊंचाई पर पहुंच गए'। डाहरेन डॉल्फ का मानना था कि जर्मनी एक औद्योगिक समाज था परंतु वह पूंजीवादी समाज नहीं बन सका था। बिचौलिए, छोटे उत्पादकों या मिट्लस्टैंड की बड़ी संख्या में उपस्थिति अधूरे आधुनिकीकरण का ही प्रमाण था। जर्मन इतिहास की दृष्टि से एक अधिक गंभीर बात यह थी कि जर्मन बुर्जुआ वर्ग जर्मन समाज का जनतांत्रीकरण नहीं कर सका। यहां तक कि एक मूक बुर्जुआ आंदोलन भी जनतांत्रीकरण की सम्पूर्ण और समुचित प्रक्रिया का विकल्प नहीं होता। फ्रांस के समान जर्मन राष्ट्र-राज्य उदारवादी जनतांत्रिक विचारों पर आधारित नहीं था और जर्मन उदारवादी बुर्जुआ वर्ग की कमजोरियां इसके लिए ज्यादा जिम्मेदार थीं।

18.2.4 राष्ट्रवाद और प्रजातंत्र

हालांकि जर्मन उदारवादी बुर्जुआ वर्ग ने जनतांत्रिक सुधारों के साथ-साथ राष्ट्रीय एकीकरण की भी इच्छा प्रकट की थी परंतु 1848-49 की क्रांति की हार के बाद उन्हें इन दोनों में से किसी एक का चुनाव करना था। शिक्षित और सम्पत्तिधारी उदारवादियों ने यह महसूस किया कि वे जर्मनी में संकीर्णवादी समूहों के साथ सीधे टकराव कर राज्य या जनतांत्रिक स्वतंत्रताओं को प्रभावित नहीं कर सकते थे। इसके अलावा जर्मनी राजनैतिक दृष्टि से कई हिस्सों में बंटा हुआ था। छोटे और मध्यम आकार के जर्मन राज्यों को कानून व्यवस्था और यथास्थिति बनाए रखने के लिए प्रशा की सैन्य शक्ति पर आश्रित रहना पड़ता था। इस प्रकार राष्ट्रीय एकीकरण और जनतांत्रीकरण को एक साथ प्राप्त करना कठिन हो गया। उदारवादी इतने कमजोर थे कि वे जुंकर (प्रशाके) भूमिपतियों और संकीर्णवादियों से टक्कर नहीं ले सकते थे। वे खुद भी संकीर्णवादी थे। यहां तक कि बुर्जुआ क्रांति की संभावना भी क्षीण पड़ गई क्योंकि इस समय तक पर्याप्त संख्या में मजदूर वर्ग पैदा हो चुका था जो उदारवादी बुर्जुआ वर्ग के मूल्यों में विश्वास नहीं रखता था।

प्रशा की पुरानी व्यवस्था के खिलाफ अपनी कमजोरियों को पहचानने के बाद राष्ट्रीय उदारवादियों ने 1866-1878 में बिस्मार्क से सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न किया। प्रशा में संसदीय प्रजातंत्र लागू किए जाने
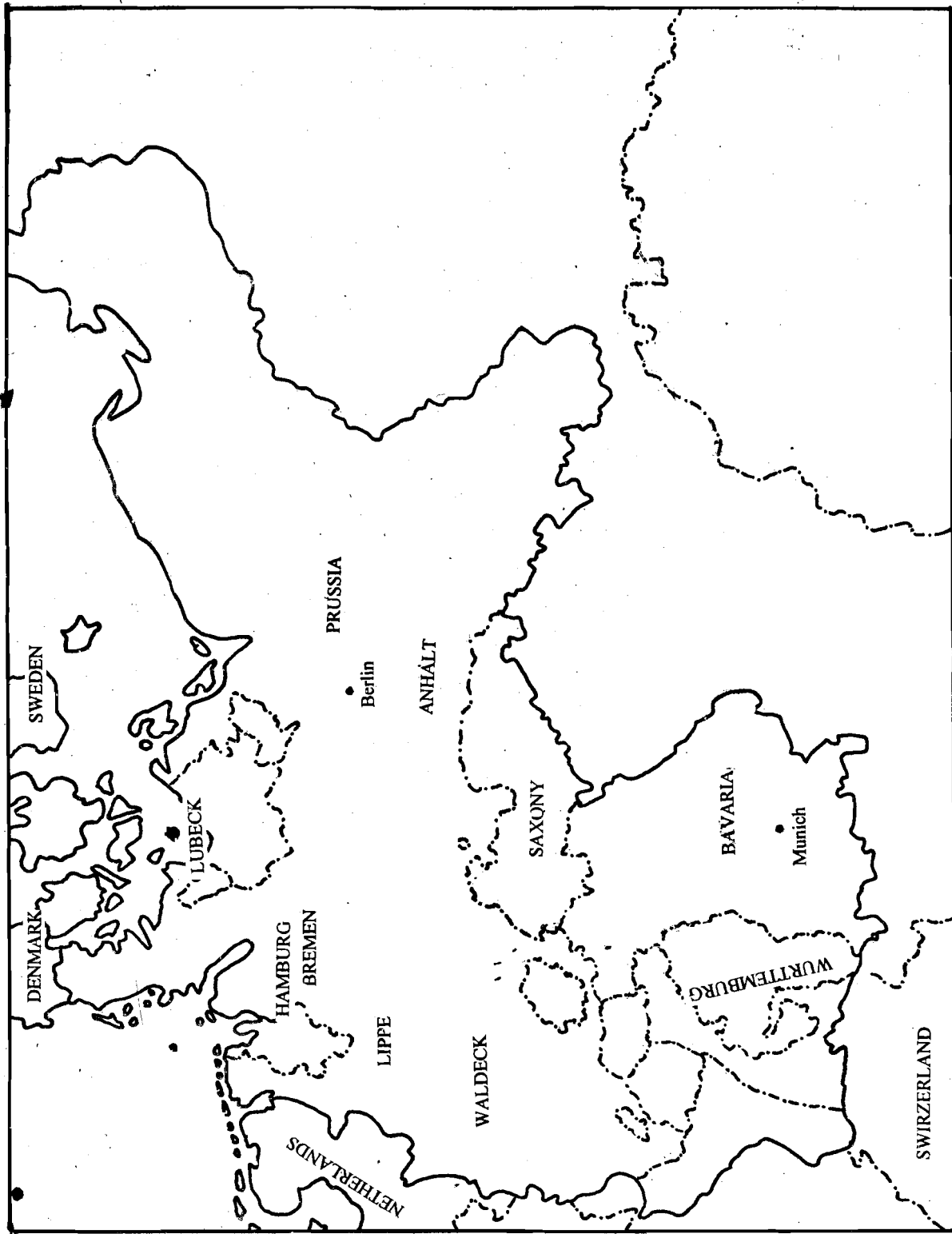
मानचित्र 3: जर्मनी, 1871-1914

की मांग के स्थगन के आधार पर यह सहयोग प्राप्त किया गया। वस्तुतः राष्ट्रीय एकीकरण और जनतांत्रिक सुधारों के समीकरण के साथ लक्ष्य की प्राप्ति बहुत मुश्किल थी। 1848-49 के क्रांतियों की पराजय और बिस्मार्क द्वारा रक्त तथा लौह की नीति अपनाए जाने के कारण एकीकरण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने से निस्संदेह जर्मनी में बुर्जुआ वर्ग ने एक क्रांति की परंतु राजनैतिक जीवन का जनतांत्रीकरण न के बराबर हुआ।

18.2.5 एकीकरणः आरोपित क्रांति

राष्ट्रीय बाजार, रेलवे लाइन और संचार व्यवस्था के निर्माण तथा आत्म जागरूकता तथा बुर्जुआ वर्ग के उदय के कारण जर्मन एकीकरण की प्रक्रिया तेज हुई। उदारवादी बुर्जुआ वर्ग और भूमिपति वर्ग के बीच युद्ध और कूटनीति द्वारा समझौता कराकर एकीकरण का लक्ष्य प्राप्त किया गया।

अपनी तमाम कमजोरियों के बावजूद 1815 का परिसंघ या जर्मन बंड 1876 तक जर्मनी की राष्ट्रवादी शक्तियों के लिए पूर्व निर्धारित और वैध रंगमंच बना रहा। 1851 में पूर्वी प्रशा और स्लेशविग जर्मन परिसंघ के हिस्से नहीं थे जबकि चेक बहुल क्षेत्र बोहेमिया और मोसविया इसमें शामिल थे। 1848 में जर्मन सभा के लिए होने वाले चुनावों में हिस्सा लेने से चेक उदारवादियों ने मना कर दिया। इस प्रकार यह परिसंघ एक ऐसे बृहद जर्मनी का आधार नहीं प्रदान कर सका जिसमें सभी जर्मन भाषी लोग शामिल हों बल्कि यह एक एकीकृत जर्मनी के लिए एक सर्वाधिक मान्य स्वरूप के रूप में उभरकर सामने आया। 19वीं शताब्दी में जर्मनी में हुए सबसे बड़े और व्यापक आंदोलन के कारण 1848 में जर्मन राष्ट्रीय सभा की स्थापना की गई। 1848 के फ्रैंकफर्ट संसद में संक्षेप में जनतांत्रिक और एकीकृत जर्मनी की संभावना का संकेत दिया गया। जनतांत्रिक आंदोलन को दबाए जाने से इस प्रक्रिया में देरी हुई और जर्मन राष्ट्रवाद की प्रकृति बदल गई। यदि फ्रैंकफर्ट उदारवादी संसद अपने उद्देश्यों में सफल हो गया होता तो इसके फलस्वरूप 'एक केंद्रीकृत राजतंत्र या एक संघीय या अविभाज्य गणतंत्र' की स्थापना हुई होती। यहां तक कि 1849 में राष्ट्रीय सभा ने क्लाइनडयेश राइख या लघु जर्मनी का विकल्प चुना। हालांकि उदारवादियों की पराजय के बाद जर्मनी एकीकरण की भावी राजनीति का निर्धारण प्रशा जर्मनी के संकीर्णवादियों और प्रशा तथा आस्ट्रिया की राजवंशीय शत्रता द्वारा निर्धारित हुआ। जर्मनी में इन दो प्रमुख राजशाही ताकतों की शत्रुता के कारण 1866 में आस्ट्रिया और प्रशा के बीच युद्ध हुआ जिसके परिणामस्वरूप आस्ट्रिया को जर्मन राष्ट्र से अलग कर दिया गया।

बिस्मार्क और जर्मन एकीकरण

हालांकि 1848-49 की क्रांतियां जर्मन राजनीति के जनतांत्रीकरण या जर्मनी के एकीकरण में असफल रहीं परंतु आनेवाले वर्षों में जर्मन राज्यों की संकीर्णवादिता और विशिष्टतावादिता में सुधार हो सका। बिस्मार्क ने कहा था कि "लैंडटैग निर्णयों, अखबारों और शूटिंग कल्ब उत्सवों से जर्मनी को एकीकृत नहीं किया जा सका परंतु उदारवाद ने युवराजों पर इस बात के लिए दबाव डाला कि वे साम्राज्य को अधिक रियायतें प्रदान करें।" जर्मन सेना की सहायता से बिस्मार्क ने जर्मनी का एकीकरण किया।

युद्ध और कूटनीति के सहारे जर्मनी का एकीकरण किया गया क्योंकि मध्य यूरोप में एक मजबूत राज्य के बनने से बड़ी शक्तियों के संबंध में खलल पड़ना अवश्यभांवी था और इससे फ्रांस के हितों पर विशेष रूप से प्रभाव पड़ना था। प्रशा की विधान सभा बिस्मार्क के सैन्य खर्च के प्रति सकारात्मक नहीं थी और इसके लिए उसने अनुमोदन देने से मना कर दिया था परंतु फिर भी प्रशा का यह नेता प्रशा के वर्चस्व और जर्मन एकीकरण के अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल रहा। 1863 में श्लेशविग-होस्टिंग के डचों पर जर्मनों के दावे के मुद्दे को फिर से उठाना जो कि 1848 में एक महत्वपूर्ण मुद्दा था और डेनमार्क से इन डच क्षेत्रों को छीन लेने के बाद आस्ट्रिया से युद्ध होना अवश्यंभावी हो गया। आस्ट्रिया और प्रशा के बीच हुए युद्ध में हालांकि कुस्टोज में आस्ट्रिया को विजय प्राप्त हुई परंतु कोनीग्राट्ज में उन्हें मुंह की खानी पड़ी। 1867 में उत्तर जर्मन परिसंघ के निर्माण से फ्रांस की शक्ति या सुरक्षा को खतरा पैदा हो गया। इसलिए यह कथन सही माना जा सकता है कि कोनिग्राट्ज में आस्ट्रिया की नहीं फ्रांस की हार हुई। 1866 के आस्ट्रिया प्रशा युद्ध में बिस्मार्क की विजय से यह स्पष्ट हो गया कि फ्रांस और जर्मनी के युद्ध के बाद ही जर्मन एकता संभव हो सकेगी। नेपोलियन III के परामर्शदाता यह नहीं चाहते थे कि और जर्मन एकीकरण आगे बढ़ सके दूसरी ओर बिस्मार्क

जर्मन राष्ट्र-राज्य को मजबूत करने के लिए फ्रांस को युद्ध भूमि में हराना चाहता था। स्पेन की गद्दी पर होहेन जॉलरेन के उत्तराधिकार के विवाद को बहाना बनाकर बिस्मार्क ने फ्रांस के साथ युद्ध छेड़ दिया जिससे फ्रांस को प्रतिरक्षा की मुद्रा में आना पड़ा जबकि जर्मन लोगों में देशभक्ति की भावना पैदा हो गई।

अन्ततः प्रशा और आस्ट्रिया के बीच हुए युद्ध ने जर्मन एकीकरण की प्रक्रिया में एक और महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जुलाई 1863 में आस्ट्रिया के सम्राट फ्रांसिस जोसेफ ने संघीय सुधार की योजना पर विचार करने के लिए फ्रैंकफर्ट में सभी जर्मन राजाओं की एक बैठक बुलाई। इस सुधार के द्वारा पुनर्संगठित केंद्रीय सत्ता आस्ट्रिया और उसके सहयोगियों के हाथों में स्थाई रूप से सौंपी जानी थी। आस्ट्रिया के सम्राट ने प्रशा के राजा को इस सम्मेलन में आने का न्योता दिया और कहा कि यह सुधार संकीर्णतावादी दृष्टि से होना था और इसमें क्रांति का कोई खतरा नहीं था। हालांकि राजा विलियम इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए लगभग राजी हो गया था परंतु बिस्मार्क ने कहा कि अगर राजा ने फ्रैंकफर्ट के सम्मेलन में हिस्सा लिया तो वह इस्तीफा दे देगा और इस प्रकार प्रशा के इस मंत्री ने जर्मनी में आस्ट्रिया की स्थिति मजबूत करने की उसकी साजिश को नाकामयाब कर दिया। प्रशा की अनुपस्थिति से आस्ट्रिया के प्रस्ताव का कोई मतलब नहीं रह गया। संघीय सुधार की अपनी योजना पर जर्मन परिसंघ के साथ मिलने के आस्ट्रिया के प्रस्ताव को छोटे जर्मन राज्यों के साथ-साथ जनमत ने भी अस्वीकार कर दिया। छोटे राज्य अपनी स्वायत्ता और लेन देन की शक्ति बनाए रखना चाहते थे, अतः उन्होंने आस्ट्रिया का यह प्रस्ताव वैसे ही नामंजूर कर दिया था। उदारवादी विचारधारा ने आस्ट्रिया का प्रस्ताव ठुकरा दिया क्योंकि उसमें लोक जनमत पर आधारित संसद का कोई प्रावधान नहीं था। बिस्मार्क ने 1863 में यह घोषणा की कि वह प्रत्यक्ष मतदान पर आधारित जन सभा को समर्थन देने के लिए तैयार है। परंतु उसकी इस घोषणा पर किसी ने विश्वास नहीं किया। अंततः उत्तरी जर्मन परिसंघ ने राइखस्टैग का चुनाव व्यस्क मताधिकार के आधार पर किया।

बिस्मार्क की नीति को प्रशा की प्रातिनिधिक सभा में पर्याप्त समर्थन प्राप्त नहीं था परंतु वह अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल रहा क्योंकि आन्तरिक नीति के कारणों से राजा बिस्मार्क की नीतियों को मानने के लिए तैयार था। अक्टूबर 1864 में 12 वर्षों के लिए जॉल्वेरिन को उसके मूल रूप में पुनः मंजूरी दे दी गई। इसका कारण यह था कि इससे प्रशा के हितों की पूर्ति होती थी और जर्मनी में संघीय सुधार के प्रश्न के साथ-साथ ज्यादातर लोग इसके समर्थन में थे। आस्ट्रिया ने दक्षिण जर्मन राज्यों के असंतोष का उपयोग कर जॉल्वेरिन को समाप्त करने की कोशिश की और प्रशा की उदारवादी सीमा शुल्क नीति के खिलाफ दक्षिण जर्मन राज्यों की भावनाओं का अपने पक्ष में उपयोग करने की कोशिश की परंतु आस्ट्रिया शुल्क संघ में शामिल होकर दक्षिण जर्मन राज्यों को अधिक संरक्षणवादी नीति अपनाने के लिए उकसाना चाहता था परंतु इसमें भी उसे सफलता नहीं मिली। अंशतः इसका कारण यह था कि उत्तर जर्मनी के छोटे राज्य प्रशा के क्षेत्र से घिरे हुए थे और उन्हें आस्ट्रिया की इस प्रकार की संरक्षणवादी नीति से फायदा होने वाला नहीं था। बावेरिया और आस्ट्रिया के साथ राजनीतिक संबंध रखने के बावजूद सैक्सोनी जॉल्वेरिन में बना रहा। दक्षिण जर्मन राज्य प्रशा की सीमा शुल्क नीति को मानने के लिए बाध्य हुए क्योंकि उत्तरी जर्मन राज्यों के बिना वे आस्ट्रिया के साथ शुल्क संघ में शामिल नहीं होना चाहते थे। चूंकि आस्ट्रिआई साम्राज्य के साथ शुल्क संघ में शामिल होने से उनका आर्थिक हित नहीं सधता था और चूंकि वे अलग-थलग नहीं रहना चाहते थे इसलिए छोटे दक्षिणी जर्मन राज्य भी जॉल्वेरिन में बने रहे।

1866 में आस्ट्रिया से युद्ध करने से पहले बिस्मार्क ने अपनी नीतिगत कुशलता से अन्तरराष्ट्रीय स्थिति अपने पक्ष में कर ली। 1866 में प्रशा की विजय के बाद छोटे जर्मन राज्यों को जिस तरह उसने संभाला और 1867 में जिस प्रकार उत्तरी जर्मन परिसंघ का निर्माण किया उससे उसकी कूटनीतिक योग्यता और सफलता का परिचय मिलता है। हैनोवर, हेसेका एलेक्टोरेट, नासू मिला लिए गए। दक्षिण जर्मन राज्यों के साथ गुप्त प्रतिरक्षात्मक और आक्रामक संधियां की गईं ताकि आस्ट्रिया और जर्मनी में युद्ध होने की स्थिति में सम्पूर्ण गैर आस्ट्रियाई जर्मनी एकीकृत हो जाए। निस्संदेह फ्रांस के डर से छोटे दक्षिण जर्मन राज्य प्रशा में जा मिले। बंडूसरैथ या उत्तरी जर्मन परिसंघ के संघीय परिषद में प्रशा अल्प मत में था और छोटे राज्यों का बहुमत था। कुल 43 सदस्यों में प्रशा के केवल 17 सदस्य थे। हालांकि उत्तरी जर्मन परिसंघ ने संयुक्त निवेश नीति और सैन्य व्यवस्था कायम की परंतु छोटे-छोटे राज्यों की स्वतंत्रता को विशेष महत्व दिया।

दक्षिण परिसंघ के निर्माण की असफलता से यह सिद्ध हो गया था कि दक्षिणी राज्य अंततः बिस्मार्क के उत्तरी जर्मन परिसंघ में शामिल हो जाएंगे। हालांकि बैडेन इसमें शामिल होने का इच्छुक था परंतु बावेरिया और वर्टेमबर्ग इसका विरोध कर रहे थे। 1870 में फ्रांस के साथ हुए युद्ध में प्रशा की विजय ने जर्मन साम्राज्य का निर्माण किया। दक्षिण जर्मन डायटों के अनुमोदन के बाद 1871 में चार दक्षिण राज्यों बावेरिया, वर्टेम बर्ग, बैडेन और हेस जर्मन साम्राज्य में शामिल हो गए। जर्मन साम्राज्य का संघीय स्वरूप सामने आया क्योंकि बावेरिया सेना, विदेश मामले, डाक विभाग और रेलवे के क्षेत्र में रियायतें प्राप्त करना चाहता था।

बोध प्रश्न 1

1) जर्मन राष्ट्रवाद की राजनीतिक पृष्ठभूमि पर विचार कीजिए। उत्तर 100 शब्दों में दीजिए।

....

....

....

....

....

2) जर्मनी के एकीकरण में आर्थिक प्रक्रियाओं से किस प्रकार मदद मिली ?

....

....

....

....

....

3) जर्मनी के एकीकरण में बिस्मार्क ने क्या भूमिका अदा की ? 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

18.3 इतालवी राष्ट्रवाद की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

आस्ट्रिया के मंत्री मेटरनिख ने 1847 की गर्मी में लॉर्ड पामर्स्टन से हुई अपनी बातचीत में इटली को एक 'भौगोलिक अभिव्यक्ति' कहा था। निस्संदेह 18वीं शताब्दी के अंत में उभरा इतालवी राष्ट्रवाद वस्तुतः 1830 और 40 के दशक में ही व्यापक समर्थन पा सका।

18.3.1 राष्ट्रवाद का विचार

पुनर्जागरण काल और उसके पहले से ही इटली के विचार के रूप में इटली का अस्तित्व कायम था। इतालवी भाषा को एक सौम्य और सुंदर भाषा के रूप में देखा जाता था और इतालवी राज्यों की आम सांस्कृतिक जड़ों की बात की जाती थी।

सार्वभौमवाद की दो महान शक्तियों — होली रोमन साम्राज्य और पोप प्रथा — के पतन के बाद फ्रांसिसको पेट्रैक (1304-1374) प्रेरणा और सांत्वना के लिए पुरातनता की ओर मुड़ा। हालांकि देशभक्त कहकर उसकी प्रशंसा की जाती रही परंतु वे शुद्ध रूप से साहित्यिक देशभक्ति का प्रतिनिधित्व करते थे। 14वीं शताब्दी में कोला दी रियेन्जो ने रोम की छत्रछाया में पूरे इटली को एकीकृत करने का प्रयास किया था। हालांकि पुनर्जागरण के दौरान प्राचीन देशभक्ति के पुनरुत्थान से एक छोटे साहित्यिक समुदाय में राष्ट्रवाद के विचार पनपने लगे थे। रियेन्जो के रोमन लोगों की प्रभुसत्ता और इटली की एकता की उद्घोषणा और अभिजात्यतंत्र के खिलाफ सामान्य जनों के लिए उनके समर्थन में राष्ट्रवाद और प्रजातंत्र का विचार शायद ही कहीं नजर आता हो। हालांकि रियेन्जो ने 'पोपुलस रोमानस' की व्याख्या इतालवी राष्ट्रवाद के रूप की थी परंतु किसी भी प्रकार के 'सीमित राष्ट्रवाद' से उनका और उनके युग का परिचय नहीं था। 19 सितम्बर 1347 को इतालवी नगरों के नाम लिखे रियेन्जो के पत्र में आरंभिक राष्ट्रवाद की झलक मिलती है। हालांकि न तो संभ्रांत वर्ग के लोग और न ही आम जनता रियेन्जो के राष्ट्रवाद को समझ सकी।

16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इटली के राजनैतिक क्षेत्र पर राजनैतिक वर्चस्व स्थापित करने के लिए फ्रांसीसी स्विस और जर्मन सेनाओं के बीच लगातार संघर्ष चलता रहा। 15वीं शताब्दी के मध्य में पांच प्रमुख इतालवी राज्यों वेनिस, मिलान, फ्लोरेन्स, नेपल्स और पोप के राज्यों में जो संतुलन कायम हुआ था, वह 1494-1559 के इतालवी युद्धों से छिन्न-भिन्न हो गया। हालांकि फ्रांस और स्पेन में राष्ट्रवाद की भावना पनपने लगी थी। परंतु इटली के लोगों में मिलान, फ्लोरेन्स या जेनेवा के प्रति प्रांतीय या स्थानीय लगाव का भाव बहुत ही मजबूत था। परंतु वे कभी-कभी सर्वदेशीय भी हो जाते थे जो अधिक बड़े और शक्तिशाली राजनैतिक इकाइयों की सेवा में किसी भी शर्त पर सन्नद्ध हो सकते थे। लॉरो मार्टिन्स के अनुसार " कैस्टिग्लियनो के दरबारियों को राजाओं की सेवा करने का प्रशिक्षण दिया गया था राष्ट्र या मातृभूमि की नहीं।" इटलीवासियों के एकीकरण की सफलता का मूल उनके सामाजिक यथार्थ में ढूंढा जा सकता है। वहां शासक और शासित, भूमिपति और किसान तथा राजकुमार और कुलीन वर्ग के बीच विरोध का भाव था। मैक्यिवेली द्वारा कमजोर सरकार की आवेशपूर्ण आलोचना के पीछे यही यथार्थ काम कर रहा था। इन इतालवी युद्धों ने शासकीय वर्गो की चेतना को प्रभावित किया।

18.3.2 इतालवी भाषा

1500 ई. के आस-पास हुए इतालवी युद्धों के दौरान उपयुक्त साहित्यिक भाषा का प्रश्न महत्वपूर्ण रूप से उभरकर सामने आया। रोम और मिलान, उर्बिनो और मनतुआ के दरबारियों के बीच बहस शुरू हुई। इस बहस में ऐसी साहित्यिक भाषा पर विचार किया जाने लगा जो बोलियों से ऊपर उठकर इटली को एक सर्वमान्य भाषा दे सके और इस प्रकार पूरे इतालवी उपमहाद्वीप को एक भाषा देने का प्रयास किया जाने लगा। इटली पर सेनाओं के आक्रमण होने के फलस्वरूप एकीकृत साहित्यिक देशी भाषा के लिए अभियान शुरू हुआ। इस बहस के आरंभ से ही इतालवी भाषा में लिखे गए साहित्य को लैटिन से अगर श्रेष्ठ नहीं तो उसके बराबर माना गया।

परंतु भाषा पर हुई बहस से इटली में व्याप्त क्षेत्रीय मतभेद ही नहीं बल्कि सामाजिक विभाजन भी सामने आए। शासकीय वर्ग और आम जनता के बीच भाषाई मतभेद और यह माना जाना कि इटली में प्रभुत्वशाली सामाजिक समूहों के लिए एक अलग भाषा हो सकती है। उस समय के संभ्रांतवादी दृष्टिकोण का स्पष्ट परिचय देता है।

18.3.3 मानवतावाद

वस्तुतः इतालवी मानवतावादियों का महान योगदान भी संभ्रांतवर्ग के पक्ष में दिखाई देता है। महान इतालवी मानवतावादी "शक्तिशाली सामाजिक समूहों को संबोधित करते हैं और उन्हीं की बात करते हैं।"मानवतावादी जिन शैक्षिक और राजनैतिक व्यवस्था के आदर्शों में विश्वास रखते थे उन्हें विशेषाधिकार प्राप्त संभ्रांत वर्ग के समाजों में ही महसूस किया जा सकता था। मानवतावादियों ने सम्पन्न लोगों जैसे कुलीनवर्ग, राजाओं, नव धनाढ्यों, पेशेवरों और साहित्यकारों को भी संबोधित किया था। मानवतावादी चिंतन-मनन तथा पूजा-अर्चना

में विश्वास नहीं रखते थे बल्कि उनका उद्देश्य समाज में बड़े पदों पर स्थापित होनेवाले लोगों को व्यावहारिक दिशा निर्देश देना था। अपने किसी भी प्रकार के दृष्टिकोण के बावजूद सभी मानवतावादियों ने 'शक्ति के साथ खुला समझौता किया'। मानवतावादियों की साहित्यिक अभिव्यक्ति में भी उच्च वर्ग की चेतना को अभिव्यक्ति मिली थी। बुद्धिजीवी संभ्रांत साहित्यकार भीड़ के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि रखते थे और अपने को गरीबी के साथ नहीं बल्कि शक्ति के साथ जोड़कर देखते थे। चूंकि मानवतावादी अमीर आदमी की चेतना से संबोधित होते थे इसलिए वे शासकीय वर्ग में अपना प्रवेश चाहते थे। अतएव मानवतावादी 'इस बात का ध्यान रखते थे कि धन की आलोचना नैतिक दृष्टि से की जाए राजनैतिक दृष्टि से नहीं।' मानवतावादी अक्सर अज्ञानी जनता को घृणापूर्ण दृष्टि से देखते थे और कभी-कभी अमीर लोगों को कठोर हृदय और कुलीन वर्ग के लोगों को असभ्य के रूप में भी चित्रित कर देते थे। फ्लोरेनटाइन के मानवतावादी अलबर्टी ने सक्रिय राजनीति की इसलिए आलोचना की थी क्योंकि उसमें 'आलसी और डरपोक निम्न वर्ग के लोग' अधिक शामिल होते थे। यहां तक कि पुनर्जागरण के दौरान भी मनुष्य के सम्मान का आदर्श शहर में रहने वाले शासकीय समूहों को बनाया गया था।

इतालवी विचार और संस्कृति के विकास ने इटली को एक श्रेण्य (क्लासिकल) विरासत प्रदान की जिसके कारण इतालवी राष्ट्रवादी लोक संस्कृति से अपने को सम्बद्ध रखने के प्रति बहुत इच्छुक नहीं रहे। पीटरबर्क के अनुसार चूंकि एक मानकीकृत इतालवी साहित्य पहले से ही मौजूद था इसलिए दूसरी बोलियों का प्रचलन में आना विभाजनकारी था। 19वीं शताब्दी का इतालवी राष्ट्रवाद इतालवी मानवतावादियों और साहित्यकारों के सांस्कृतिक संभ्रांतवाद को दूर नहीं कर सका।

18.4 इतालवी राष्ट्रवाद की राजनैतिक पृष्ठभूमि

इटली के राजनैतिक एकीकरण की प्रक्रिया बहुत ही पीड़ादायक रही और इसमें बहुत धीमी प्रगति हुई। इस दिशा में कई क्षेत्रों में पहल की गई जिसका उल्लेख नीचे किया जा रहा है।

18.4.1 आधुनिक इतालवी राजनैतिक राष्ट्रवाद

18वीं शताब्दी के अंत में फ्रांसीसी क्रांति ने इतालवी राष्ट्रवाद के लिए एक आदर्श पेश किया। जिस समय लोम्बार्डी में फ्रांसीसी सेना का आधिपत्य था उस समय उन्होंने इटली के लिए मुक्त सरकार के सर्वोत्तम रूप विषय पर एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की। इससे एक बहस की शुरुआत हुई जिसमें इटली की प्राचीन गरिमा का गुणगान किया गया, फ्रांस और 1795 के इसके संविधान की प्रशंसा की गई और इतालवी पुनरुद्धार और एकीकरण की योजना बनाई गई। मिल्कियोरे गिया, जिसने निबंध प्रतियोगिता जीती थी और जो इटली का एक प्रमुख अर्थशास्त्री बना, को 'व्यावहारिक, आधुनिकीकृत सुधार की बुद्धिवादी परम्परा और नई जैकोबिन देशभक्ति के बीच कड़ी माना जाता था'। चूंकि पुरानी राज्य इकाइयों ने पुराने शहरी विशेषाधिकारों का पक्ष लिया था अतः इसे अस्वीकृत करना जरूरी था। एक ओर जहां नरमपंथी राष्ट्रवादियों ने एकीकरण की धीमी प्रक्रिया का समर्थन किया और सिसैल्पाइन गणतंत्र के आत्मशासित इतालवी राज्य के आदर्श को सामने रखा वहीं उग्र सुधारवादियों ने केंद्रीकरणवाद और क्रांतिकारी राष्ट्र-राज्य का पक्ष लिया।

नेपोलियन द्वारा निर्मित इटली राज्य से इतालवी राष्ट्रवादी भावना को उभारने में मदद मिली परंतु 1806 में महाद्वीपीय व्यवस्था लागू होने के बाद इसके परिणामस्वरूप फ्रांस का महाद्वीपीय उपनिवेश बन गया। इटली का बजट काफी बढ़ गया और इसके आधे से ज्यादा हिस्सा फ्रांस के सैनिक खर्चे और अंशदान में खर्च होने लगा। नेपोलियन के कानूनी नियमों और प्रांतीय व्यवस्था के कारण इटली में एकीकृत राष्ट्र-राज्य का नया आदर्श विकसित हुआ। इटली में बुद्धिवाद के दौरान नौकरशाहों, मजिस्ट्रेटों, वैधानिक और वित्तीय विशेषज्ञों का उदय हुआ और इन्हें नेपोलियन व्यवस्था में काफी महत्व मिला। हालांकि इतालवी सेना में सैनिकों की जबरदस्ती भर्ती की गई और इसका उपयोग नेपोलियन के अभियानों के लिए किया जाता था परंतु इससे भी राष्ट्रवाद की भावना उभरी। यह फ्रांसीसी आधिपत्य के खिलाफ एक प्रतिक्रिया थी। शाही रोम के साथ नेपोलियन के जुड़ाव के कारण भी इटली के लेखकों ने रोमन विरासत को अस्वीकार कर दिया।

इटली में कवियों ने राष्ट्रवाद के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। फ्रांस के समान वहां कोई शक्तिशाली राज्य नहीं था जो राष्ट्र भाषा का प्रचार-प्रसार कर सकता था। जर्मनी के समान वहां कोई भाषा सुधार आंदोलन भी नहीं हुआ था इसलिए इटली भाषा मात्र 2.5% संभ्रांत वर्ग की भाषा बनी रही जो 1860 में भी इतालवी भाषा का ही उपयोग करते थे। इटली में स्वच्छंदतावाद ने राष्ट्रवाद को प्रभावित किया परंतु यह जर्मन स्वच्छंदतावाद से अलग था। इतालवी स्वच्छंदतावाद के प्रमुख व्यक्तित्वों ने न तो श्रेण्य परम्परा को और न ही बुद्धिवाद को अस्वीकार किया। अल्फेरी और मैनजोनी जैसे सांस्कृतिक व्यक्तित्वों ने राष्ट्रवाद के विकास में निर्णायक भूमिका अदा की। राष्ट्राथ और स्थानीय शक्ति व्यवस्थाओं के बीच तनाव से भी इटली के राजनीतिक जीवन में मैनजोनी, डी एजेग्लियो, मेजनी, वर्डी और गैरिबाल्डी जैसे कलाकारों तथा साहसी लोगों को महत्वपूर्ण भूमिका मिली।

18.4.2 युवा इटली

इटली में आस्ट्रिया एक प्रमुख शक्ति थी। नेपोलियन की पराजय के बाद आस्ट्रिया का नियंत्रण और भी मजबूत हो गया। जर्मन परिसंघ की तर्ज पर इतालवी परिसंघ के लिए मेटरनिख के प्रस्ताव का पिडमौंट और पोप के परामर्शदाताओं ने विरोध किया। 1815 के बाद गुप्त संस्थाओं ने इतालवी जैकोबिन परम्पराओं के समर्थकों को अपनी ओर आकर्षित किया। कार्बोनरी और अन्य गुप्त संस्थाओं के सदस्यों का सरोकार केवल इतालवी राष्ट्रवाद से ही था। ब्योनारोति और अन्य प्रतिबद्ध जैकोबिन इटली के एकीकरण को सार्वभौम सामाजिक क्रांति की दिशा में एक कदम मानते थे। दक्षिण इटली के कार्बोनरी को 19वीं शताब्दी के क्रांतिकारी संगठनों में जनता का सबसे अधिक समर्थन हासिल था जो इटली के एकीकरण के बजाए नैपल्स के जनतांत्रीकरण में अधिक रुचि रखते थे। नैपल्स में हुए विद्रोह में कार्बोनरी ने एक जनतंत्रीय संविधान की मांग की और वे 1820 के स्पैनिश विद्रोह से प्रभावित थे। हालांकि नैपल्स में कार्बोनरी के उग्र सुधारवादी सदस्य पोप के राज्यों और पिडमौंट में लोम्बार्डी और इटली के अन्य भागों में क्रांति को फैलाना चाहते थे परंतु सैनिक षड्यंत्र बहुत सफल नहीं हुए। 1820-21 की क्रांतियों की असफलता के बाद काफी लोगों को देश निकाला दिया गया और उन्हें ब्रिटेन भेज दिया गया। इसके परिणामस्वरूप ब्यूनारोति के समतावादी दृष्टिकोण से अलग एक उदारवादी प्रवृत्ति सामने आई।

1830-31 की क्रांतियों की असफलताओं के बाद (खासतौर पर मोडेना और बोलोगना में) इटलीवासियों ने तीव्रता से यह महसूस किया कि उन्हें अपने प्रयत्नों पर ही निर्भर रहना होगा और आंदोलन की खुली विधि अपनानी होगी। ग्युसेप मेजनी ने युवा इटली की शुरुआत की और क्रांतिकारी तानाशाही तथा आतंकवाद के कट्टरपंथी नमूने को अस्वीकार कर दिया। मेजिनी एक जनतांत्रिक राष्ट्रवादी था जिसने हमेशा नरमपंथियों के संभ्रांतवाद और जैकोबिन के क्रांतिकारी तानाशाही के आदर्श को अस्वीकार किया। सुधारवादी मेजिनी का मानना था कि सभी प्रकार के संघवाद स्थाई संभ्रांतवर्ग के वर्चस्व को बनाए रखने के तरीके हैं। मेजिनी का राष्ट्रवाद विशिष्ट नहीं था और वे सभी राष्ट्रों की स्वतंत्रता के बाद यूरोप के संयुक्त राज्यों के उदय में विश्वास रखते थे। हालांकि वे राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए जन संग्राम में विश्वास रखते थे परंतु उनका यह भी मानना था कि सार्वभौम मताधिकार के आधार पर जनतांत्रिक सरकार की स्थापना की जानी चाहिए। मेजिनी ने जन संग्राम में किसानों के समर्थन के महत्व को समझा परंतु इटली के गणतंत्र कभी भी शहर और गांवों के अन्तर को पाट नहीं सके।

18.4.3 पिडमौंट-सार्डिनिया

इटली में कई राज्य थे जो फ्रांसीसी-आस्ट्रिआई शत्रुता के संबंध में अपनी स्वायत्ता और विशेषाधिकार सुरक्षित रखना चाहते थे। इटली में राष्ट्रीय एकीकरण की प्रक्रिया इन्हीं पर आधारित थी। पिडमौंट इटली का एक राज्य था जिसने इटली को एकीकृत किया। 1840 तक यहां के राजा चार्ल्स एलबर्ट ने उदारवाद या देशभक्ति के किसी पक्ष में अपना झुकाव प्रदर्शित नहीं किया। चार्ल्स एलबर्ट (1831-1849) एक संकीर्णवादी राजा था जो मेटरनिख व्यवस्था से परहेज नहीं रखता था और इटली में क्रांति को रोकने के लिए आस्ट्रिआई फौज का उपयोग करने में उसके सामने कोई दुविधा नहीं थी। फ्रांस में आल्प से आगे के क्षेत्र पर भी एलबर्ट ने अपना दावा किया था और उसने नैपल्स के राजा द्वारा प्रस्तावित इतालवी राज्यों के संघ में शामिल होने से इनकार

कर दिया। वस्तुतः चार्ल्स एलबर्ट की आस्ट्रिया के साथ संधि को उसके दरबारियों ने पूर्ववर्ती शासन काल से अलग माना। 1847 में इतालवी राज्यों को एक दूसरे के निकट लाने में प्रथम चरण के रूप में पोप ने 1847 में सीमा शुल्क संघ के निर्माण का प्रस्ताव रखा। टुसकैनी का लियोपोर्डो ग्रैनड्यूक इस सीमा शुल्क संघ में शामिल होने के लिए राजी हो गया परंतु पिडमौंट को यह मान्य नहीं था। पोप के दूत कार्बोली बस्सि ने स्पष्ट किया कि उनके स्वामी इटली की एकता के लिए नरमपंथी मांगों को स्वीकार कर क्रांतिकारियों और एकीकृत इतालवी गणतंत्र के समर्थकों को रोकना चाहते हैं।

पोप के दूत ने महसूस किया कि पिडमौंट का राजा इस संघ में शामिल होने से हिचक रहा था क्योंकि वह उत्तर मध्य इटली के आस्ट्रिआई आधिपत्य वाले छोटे डच क्षेत्रों पर आधिपत्य जमाकर अपना राज्य बढ़ाना चाहता था। इटली में वर्चस्व स्थापित करने के लिए पिडमौंट और आस्ट्रिया के बीच चल रहे संघर्ष में पोप नेतृत्व की बागडोर पिडमौंट को सौंपने के लिए तैयार थे।

हालांकि आर्थिक दृष्टि से पिडमौंट प्रशा के समान मजबूत नहीं था परंतु इटली की क्रांति की प्रक्रिया में राजनैतिक और सैनिक दृष्टि से सर्वाधिक सक्रिय प्रतिभागी थे। कैवूर, मेजिनी और गैरिबाल्डी को एकीकरण का मस्तिष्क, हृदय और तलवार कहा गया है। हालांकि 1849 के पहले पिडमौंट की नीतियां बहुत स्पष्ट नहीं थीं परंतु 1850 के दशक में काउंट कैवूर की दृढ़ प्रतिज्ञ नीतियों और मेजिनी तथा गैरिबाल्डी के नेतृत्व में जन आंदोलनों ने मिलकर इटली का एकीकरण किया। कैवूर ने राजनैतिक एकीकरण के लिए और इटली को आस्ट्रिया के शिकंजे से मुक्त करने के लिए आस्ट्रिया के साथ युद्ध किया और इसमें नेपोलियन III के साथ अपनी मित्रता और संधि का उपयोग किया। पिडमौंट-सार्डिनिया की क्षेत्रीय विस्तार की आकांक्षाओं और सामाजिक स्थिरता कायम करने की इच्छा ने अभिजातीय वर्गीय कैवूर के दृष्टिकोण का निर्माण किया। एकीकरण को प्रमुखतः स्थाई सेना और नौकरशाही पर निर्भर होना था जन आंदोलनों पर नहीं।

पिडमौंट-सार्डिनिया ने जन आंदोलन का अपने अनुसार उपयोग किया। उन्होंने राष्ट्रीय एकीकरण के लिए किए जाने वाले युद्धों में उन्हें स्वतंत्र भूमिका प्रदान नहीं की। इसलिए युद्धों में कम लोग हताहत हुए। प्रथम (1848-49) और द्वितीय (1859-60) स्वतंत्रता संग्राम में केवल 3000 लोगों की मृत्यु हुई। 1855 के क्रिमिया युद्ध में केवल 14 इटलीवासी मरे। इटली के तीसरे स्वतंत्रता संग्राम में समुद्र और जमीन पर लगभग 1000 लोग मारे गए। 1867 में मेनताना में गैरिबाल्डी ने 600 लोगों को खोया, सितम्बर 1870 में इटली की स्थाई सेना के 24 जवान मारे गए। 1848 और 70 के बीच स्थाई और स्वैच्छिक सेनाओं के 6000 जवान मारे गए और 20,000 घायल हुए। एकीकरण के बाद दक्षिणी इटली को शांत करने के क्रम में सभी स्वतंत्रता संग्रामों की अपेक्षा ज्यादा लोग मरे। इन तीनों स्वतंत्रता संग्रामों के महत्व को देखते हुए काफी कम लोगों ने जानें गंवाईं। 1870 के फ्रांसीसी-प्रशा युद्ध के दौरान एक दिन में जितने लोग मारे गए थे उससे कम लोग इन तीनों स्वतंत्रता संग्रामों में मारे गए।

स्वतंत्रता संग्राम का वित्तीय बोझ पिडमौंट-सार्डिनिया को उठाना पड़ा और इस प्रकार 1850 के दशक में कैवूर द्वारा शुरू किया गया आधुनिकीकरण का कार्यक्रम बुरी तरह प्रभावित हुआ। इटली को एकीकृत करने में पिडमौंट को काफी त्याग करना पड़ा। इस कारण 1861 में एकीकृत राज्य में पिडमौंट का प्रभाव सबसे ज्यादा था।

18.4.4 कैथोलिक चर्च

इटली के सांस्कृतिक और राजनैतिक जीवन में कैथोलिक चर्च ने महत्पूर्ण भूमिका अदा की। नव-ग्वेल्फ इतिहासकारों और साहित्यकारों ने राष्ट्रवाद के विचार और चर्च के बीच मेल-मिलाप कराने की कोशिश की थी। पिडमौंट के पुरोहित विन्सेन्जो गियोबर्टी ने पोप की अध्यक्षता में इटली परिसंघ बनाने की बात की। 1846 और 1848 की क्रांति के बीच की अवधि में गियोबर्टी और मेजिनी के विचारों में मेल होने की संभावना दीख रही थी। अप्रैल 1848 में जब पोप पायस ने कैथोलिक आस्ट्रिया के खिलाफ राष्ट्रीय युद्ध से अपना समर्थन वापस ले लिया तो उन्हें इटली में राष्ट्रवादी विचार का समर्थन भी खोना पड़ा। हालांकि उदारवादी कैथोलिक आंदोलन ने पोप के विरोध के बावजूद कैथोलिकवाद के साथ राष्ट्रवाद के मेल-मिलाप के विचार

को आगे बढ़ाने में मदद दी। हालांकि 1847 में पिडमौंट के राजा की अपेक्षा पोप सीमा शुल्क संघ बनाने के लिए ज्यादा उत्सुक थे। परंतु वे जनता की चेतना को जगाने के लिए अपनी नैतिक सत्ता का उपयोग करने के पक्ष में नहीं थे। अप्रैल 1848 के उपदेश के बाद पोप ने यह घोषणा की कि वह आस्ट्रिया के दमन के खिलाफ धर्म युद्ध नहीं छेड़ेंगे। इस प्रकार आस्ट्रिया के साथ राजनैतिक संघ बनाने की संभावना कल्पना मात्र रह गई। इसके जवाब में पोप के मंत्री ने यह तर्क दिया कि पिडमौंट के विस्तार और इटली की स्वायत्ता को एक दूसरे का पर्याय नहीं माना जाना चाहिए।

रोम में हुई क्रांति और पोप के पलायन के बाद रोमन गणतंत्र की स्थापना हुई। फ्रांसीसी और आस्ट्रियाई सेनाओं की मदद से पोप जून 1849 में वापस लौटने में सफल रहा। इटली के एकीकरण के समय पोप और कैथोलिक चर्च ने संकीर्णवादी भूमिका निभाई। सांसारिक क्षेत्र में हारने के बाद पोप ने अपने धर्मावलंबियों को राष्ट्रीय राजनीति में भाग लेने से मना कर दिया। यह मनाही 1904 तक कायम रही। हालांकि पूर्ण रूप से यह मनाही 1919 तक कायम रही पर 1882 में मताधिकार के विस्तार के बाद बहुत थोड़े कैथोलिकों ने अपने मतों का प्रयोग किया। चर्च द्वारा धर्मनिरपेक्ष राज्य, समाजवाद, अराजकतावाद और मजदूर आंदोलन का विरोध करने के कारण संसदीय प्रजातंत्र और पुरोहितवाद शक्तियों में गठबंधन हो गया। ईसाई प्रजातंत्र और पोपतंत्र का एक राजनैतिक शक्ति के रूप में उदय प्रथम विश्व युद्ध के बाद ही हो सका।

18.5 इतालवी राष्ट्रवाद की आर्थिक पृष्ठभूमि

जर्मनी के समान इटली का राष्ट्रीय आंदोलन मजबूत औद्योगिक बुर्जुआ वर्ग पर आधारित नहीं था। जर्मनी की तुलना में इटली के राजनैतिक एकीकरण के पहले आर्थिक एकीकरण का स्तर काफी कम था तथा इटली के सीमा शुल्क संघ की जर्मन जॉल्वेरिन से कोई तुलना ही नहीं की जा सकती। दक्षिणी इटली का पिछड़ापन एक अन्य गंभीर आर्थिक समस्या थी। 18वीं शताब्दी और मध्य 19वीं शताब्दी के बीच इतालवी अर्थव्यवस्था के कुछ विद्वानों का यह मानना था कि इटली में कोई एक विशिष्ट एकीकृत अर्थव्यवस्था नहीं थी। 17वीं शताब्दी के दौरान इटली की अर्थव्यवस्था में पतन आने के बावजूद वहां की स्थिति पूर्व – औद्योगिक यूरोप या अन्य महाद्वीपों के समान अल्प विकसित अर्थव्यवस्था नहीं थी।

18.5.1 उत्तर और दक्षिण की विभिन्नता

इटली के आर्थिक और राजनैतिक विकास का विश्लेषण करते समय उत्तरी क्षेत्र के पिडमौंट और लोम्बार्डी की समृद्धि की तुलना हमेशा एक कम आधुनिकीकृत दक्षिण क्षेत्र से की जाती है। इटली के औद्योगीकरण और राष्ट्रवाद पर विचार करने वाले इतिहासकारों ने इटली के इस क्षेत्रीय असंतुलन को सबसे बड़ी बाधा माना है। इटली की आर्थिक विकास दर और राजनैतिक समस्याओं पर विचार करने वाले विद्वानों ने दक्षिण की समस्याओं का भी विवेचन किया था। उनके अनुसार इन असमानताओं के कारण इटली का एकीकरण होने के बाद अनेक समस्याएं सामने आईं। इतालवी राज्य ने दोहरी नीति अपनाई परंतु यह अपनी समस्याओं का समाधान भी नहीं कर सकी। धीरे-धीरे इतालवी राज्य कम से कम 1880 के दशक के बाद ज्यादा से ज्यादा हस्तक्षेप करने की नीति अपनाने लगा। ट्रेबिल कॉक के अनुसार 'उपमहाद्वीप के देर से राजनीतिक एकीकरण होने से और उदारवादी-स्वायत्ततावादी राजनीति द्वारा इसे प्राप्त करने के कारण राज्य की नीतियों पर ज्यादा प्रभाव डाला गया और इटली के औद्योगिक अल्प विकास पर कम ध्यान दिया।

18.5.2 राज्य और अर्थव्यवस्था

एकीकरण के बाद इतालवी राज्य ने जो नीतियां अपनाई उसके कारण कृषि शांति असफल हो गई और उद्योग के क्षेत्र में भी उत्तर-दक्षिण का भेद बढ़ गया। इसके अलावा राज्य नीतियों से अ-समान और सीमित रूप में लाभ पहुंचाया गया। उद्योग के क्षेत्र में पहले मुक्त व्यापार की नीति अपनाई गई और उसके बाद संरक्षणवाद की नीति अपनाई गई। परंतु ये दोनों नीतियां और सार्वजनिक निवेश आर्थिक विकास को तेज करने में असफल रहे। सबसे पहले 1850 के दशक में पिडमौंट में कैवूर द्वारा लागू किए गए सीमा शुल्क और व्यापार समझौते को एकीकृत राज्य में लागू किया गया। 1862-1863 के फ्रांस के साथ हुए समुद्री और व्यापार

समझौतों के बाद इंगलिश मुक्त व्यापार के तर्ज पर सीमा शुल्क को कम किया गया। यह तर्क दिया गया कि एकीकरण के दौरान ब्रिटेन और फ्रांस द्वारा राजनैतिक और सैनिक सहायता देने के एवज में मुक्त व्यापार नीतियां अपनाई गईं। विदेशी बाजार में इटली के निर्यात की पहुंच बढ़ाने और विदेशी पूंजी तथा औद्योगिकी को आकर्षित करने के लिए भी मुक्त व्यापार अपनाया गया। 1870-74 के औद्योगिक सर्वेक्षण के प्रकाशन और एलेसैन्ड्रो रोसी के नेतृत्व में उद्योगपतियों के विरोध के पश्चात एक नया सीमा शुल्क ढांचा बनाया गया। 1887 में खुले रूप में संरक्षणवादी सीमा शुल्क नीति अपनाई गई जिससे इतालवी उद्योग को मदद तो मिली परंतु औद्योगिक उत्पादों पर नाममात्र के संरक्षण का औसत स्तर मुश्किल से 21% से आगे नहीं बढ़ सका।

विकसित देशों के समकक्ष आने के प्रयास में एकीकरण के बाद इतालवी राज्य ने आर्थिक विकास की गति को तेज करने के लिए जोर लगाया। सबसे पहले एकल घरेलू उत्पाद के परिप्रेक्ष्य में सार्वजनिक व्यय का स्तर बढ़ाने का प्रयत्न किया। 1880 तक यह 12 से 14% तक के बीच ऊपर नीचे होता रहा और प्रथम विश्व युद्ध के पहले 17 से 18% तक पहुंच गया। सैनिक और प्रशासनिक खर्चे के अलावा रेलवे में भी बड़े पैमाने पर सार्वजनिक व्यय किया गया। एकीकरण और प्रथम विश्व युद्ध के बीच कुल सार्वजनिक खर्च का तीन चौथाई हिस्सा रेलवे निर्माण पर खर्च किया गया। इससे रेलवे विकास के लिए किए गए प्रयास का पता चलता है। संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी और यहां तक कि फ्रांस के समान इटली के औद्योगीकरण को रेलवे से समर्थन नहीं मिला। सबसे पहली बात यह थी कि रेलवे निर्माण के लिए अधिकांश वस्तुएं बाहर से मंगवानी पड़ती थीं। इंजीनियरिंग क्षेत्र में रेलवे की वस्तुओं की मांग 1861-95 में 8% और 1896-1913 में 13% थी। यहां तक कि रेलवे का उपयोग भी बहुत कम हो रहा था क्योंकि उत्तर और दक्षिण के बीच असमानता थी। इसका एक कारण यह भी था कि इटली से निर्यात किए जाने वाली वस्तु का भार बहुत कम होता था; देश का पिछड़ापन भी इसके लिए उत्तरदायी था। समय और वित्त की दृष्टि से इतालवी राज्य की रेलवे नीति ऊपर से आरोपित थी। हालांकि रेलवे ने इटली को एक सूत्र में बांधने की कोशिश की परंतु इसे दक्षिण क्षेत्र को इटली की आर्थिक व्यवस्था से जोड़ने में या सम्पूर्ण औद्योगिक विकास में सफलता न मिल सकी। हालांकि रिसोर्जिमेंटो और बुर्जुआ वर्ग ने एकीकरण के बाद इटली को आधुनिकीकृत करने की कोशिश की परंतु वे द्वैधता, पिछड़ेपन और प्रांतीय असंतुलन से जुड़ी समस्याओं को दूर नहीं कर पाए।

18.6 एकीकरण की प्रक्रिया

कैवूर के नेतृत्व में पिडमौंट-सार्डिनिया ने इटली के एकीकरण का नेतृत्व किया और इसमें मेजिनी और गैरिबाल्डी के नेतृत्व में जन संगठन का समर्थन प्राप्त हुआ। हालांकि इस प्रक्रिया में जन संगठन की महत्वपूर्ण भूमिका थी परंतु संभ्रांत वर्ग ने जनता की भागीदारी को कम से कम करने का प्रयत्न किया। इसीलिए ग्राम्शी ने रिसोर्जिमेंटो और इटली के एकीकरण को निष्क्रिय क्रांति कहा है। हालांकि मेजिनी जन संग्राम की अवधारणा में विश्वास रखते थे परंतु वे कृषकों को एकजुट करने में असफल रहे। 1820-21, 1830-31 और 1848-49 की क्रांतियों की असफलता के बाद गणतंत्रीय राष्ट्रवादी विचारधारा सामने आई और इटली की एकता के लिए अधिक उदारवादी कैवूर के साथ समझौता किया गया। इतालवी राष्ट्रीय समाज ने 1857 से कैवूर और गणतंत्रीय राष्ट्रवादियों के साथ कभी मूक तो कभी खुला समझौता किया। इसी समझौते के तहत कैवूर ने एक ओर गैरिबाल्डी को स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों को तैयार करने के लिए कहा और दूसरी ओर गैरिबाल्डी 1860 में 'इटली और विक्टर इमैन्यूएल' के नेतृत्व में लड़ने के लिए राजी हुआ। वस्तुतः 1860 के आरंभ में गैरिबाल्डी में स्वयं सेवी सेनानियों को जुटाने की क्षमता थी और विक्टर इमैन्यूल और पिडमौंट की सरकार ने गुप्त रूप से नेपोलियन III की सरकार के खिलाफ अभियान में नेतृत्व ग्रहण करने के लिए उन्हें आमंत्रित किया।

18.6.1 जन आंदोलन

सभी प्रकार के जन आंदोलनों और सामूहिक हिंसा का संबंध प्रमुख राजनैतिक संकटों से नहीं था बल्कि वह प्रत्यक्षतः भोजन के लिए हुए दंगों, हिंसक हड़तालों, कर विद्रोहों और भूमि पर सामूहिक कब्जा किए जाने जैसी गैर राजनीतिक घटनाओं से सम्बद्ध था जो संकट के वर्षों में अनियमितताओं के कारण पैदा हुई थी। 1830

और 1840 में फिलाडेल्फी या युवा इटली जैसे गुप्त समाज सक्रिय थे। 1820-21 में क्यूरिन, नेपल्स, पैलेरमो और अल्प क्षेत्रों में कई विद्रोह हुए और 1828-31 के दौरान फिर से कई विद्रोह हुए और अगले दो वर्षों तक जिनका प्रभाव बना रहा। सिसली, नेपल्स, वेनिस, लोम्बार्डी और पैपेल राज्यों में स्थाई तौर पर बुर्जुआ क्रांतियां हुईं जिनमें सड़कों पर दंगे हुए, भोजन के लिए दंगा हुआ तथा भूमि संबंधी दस्तावेजों और कर कार्यालयों को नष्ट किया गया। मजदूरों और किसानों ने 1848-49 में क्रांतिकारी शासन व्यवस्थाओं के खिलाफ विद्रोह किया जो शहरों में रोटी और रोजगार तथा ग्रामीण इलाकों में जमीन के वितरण की उनकी मांग को पूरा करने में असमर्थ रही । क्रांतिकारी शासन व्यवस्थाओं द्वारा आरोपित आदेश का बहादुरी से हिंसात्मक विरोध किया गया। मध्य वर्ग अपने लिए जनतांत्रिक सविंधान चाहते थे। शहर में रहने वाले निर्धनों, मजदूरों और किसानों ने उनकी कराधान और सेना में जबरदस्ती भर्ती नीतियों का जमकर विरोध किया। जर्मनी में 1848-49 में हुई क्रांतियों के समान मजूदरों, किसानों, शहर में रहने वाले निर्धनों और समाजवादियों ने उदारवादी और उच्च वर्गों से अपना संबंध तोड़ लिया और इस प्रकार क्रांतिकारी गठबंधन धराशाई हो गया। 1848-49 की क्रांतियां जन क्रांतियां थीं पर यह राष्ट्रीय स्तर पर नहीं बल्कि सीमित क्षेत्रों तक ही सीमित थीं। इन छुट-पुट और असंयोजित विद्रोहों का पिडमौंट के राजतंत्र और स्थानीय अभिजात्य वर्गों के गठबंधन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। असल समस्या यह थी कि डेमोक्रेट्स ग्रामीण इलाकों से समर्थन जुटाने में असफल रहे। युद्ध किए जाने के तरीके और राजतंत्रवादी मेजिनी की नीतियों से मोहभंग होने पर 1848 के मध्य में मेजिनी जन युद्ध की अपनी अवधारणा पर वापस लौट आए। मेजिनी के प्रयत्नों के बावजूद उनके विचारों का प्रभाव ग्रामीण इलाकों पर नहीं पड़ा और वे शहर और गांवों के भेद को कम करने में सफल नहीं रहे। इसका एक कारण यह भी था कि वे उग्र सुधारवादी रूढ़िवादी पुरोहितों की अपेक्षा किसानों के कम निकट सम्पर्क में थे। गणतंत्रवादियों को किसानों का समर्थन इसलिए भी नहीं मिला क्योंकि उनमें देशभक्ति का संचार करने के लिए भूमिपतियों ने किसी प्रकार का प्रोत्साहन नहीं दिया। 1848-49 की क्रांतियां असफल रही परंतु रोम में मेजिनी और गैरिबाल्डी के द्वारा और वेनिस में मेनिन द्वारा वीरतापूर्वक गणतंत्र की रक्षा करने से इतालवी राष्ट्रवाद और वामपंथ को बढ़ावा मिला। इटली में 1848 की क्रांतियों और गणतंत्रों की रक्षा के प्रतीकात्मक महत्व के कारण इटली के एकीकरण और राजनैतिक सुधारों पर दूरगामी प्रभाव पड़ा।

18.6.2 युद्ध और एकीकरण

कुस्टोजा (जुलाई 1848) और नोवारा (मार्च 1849) के युद्धों की हार से उबरने में इटली को ज्यादा समय नहीं लगा। भविष्य में आस्ट्रिया से युद्ध की स्थिति में ब्रिटेन और फ्रांस का समर्थन प्राप्त करने के लिए कैवूर उनके प्रतिनिधि के रूप में 1855 में क्रिमिया युद्ध में शामिल हुआ। कैवूर के सैनिक अधिकारी ने यह घोषणा की थी कि क्रिमिया के गर्भ से ही इटली का जन्म होगा। हालांकि इटली को बहुत फायदा नहीं हुआ परंतु उसे 1856 में अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर अपनी समस्याओं पर विचार करने का अवसर प्राप्त हुआ। यूरोप के राजनैतिक नक्शे को बदलने के लिए पिडमौंट ने फ्रांस के साथ संधि करने का प्रयास किया जिसके फलस्वरूप 1858 में प्लौम्बियर्स में नेपोलियन III और कैवूर के बीच समझौता हुआ। 1852 में उरबानो रत्ताज्जी के मध्यमार्गी-वामपंथ से समझौता कर कैवूर ने अपनी स्थिति मजबूत कर ली थी। मध्यमार्गी-दक्षिणपंथी और मध्यमार्गी-वामपंथ के बीच हुए समझौते से कैवूर को अपनी राजनीतिक स्थिति मजबूत करने में मदद मिली। कैवूर ने 1855 में इस समझौते का उपयोग किया। उसने क्रिमिया युद्ध के लिए रत्ताज्जी से बिना किसी शर्त के समर्थन प्राप्त किया जिसके बदले उसने रत्ताज्जी के लॉ ऑफ कान्वेन्ट का समर्थन किया जिसके तहत लगभग 300 धार्मिक घरानों और पंथों को दबाकर कैथोलिक चर्च के विशेषाधिकारों पर नियंत्रण लगा दिया गया।

आरंभ में गणतंत्रवादी कैवूर और पिडमौंटवासियों पर विश्वास नहीं करते थे परंतु धीरे-धीरे उन्होंने इटली के एकीकरण में पिडमौंट द्वारा निभाई जाने वाली केंद्रीय भूमिका को पहचाना। मानिन ने मेजिनी के साथ संबंध तोड़ लिया था और छुट-पुट विद्रोहों की आलोचना की थी। 1848-49 के वेनेशियन गणतंत्र के इस नेता ने पैलैविसिनो से यह आग्रह किया कि कैवूर को इटली की स्वतंत्रता में केंद्रीकृत भूमिका अदा करनी है। यहां तक कि गैरिबाल्डी और मेजिनी ने भी अपने-अपने ढंग से यह बात स्वीकार कर ली। कैवूर ने सितंबर 1856

में सिसली क्रांतिकारी ला फैरिना से गुप्त रूप से मुलाकात की और आस्ट्रिया से होनेवाले संभावित युद्ध में गणतंत्रवादियों का समर्थन हासिल किया। इटली में जनता की लगातार असफलता से मेजिनी के कई समर्थकों का मोहभंग हो गया।

नेपोलियनवादी कार्लो पिस्कैने ने एक आंदोलन की योजना बनाई। इसी समय लेघोर्न और जेनोआ में किसान विद्रोह हो गया। 1857 में साप्री में कार्लो ने आत्महत्या कर ली; संकीर्णवादी सानफेडिस्टी किसानों के हाथों बेदरदी से मारे जाने की बजाए उसने आत्महत्या करना ज्यादा बेहतर समझा। यह किसान उदारवादी या उग्र सुधारवादी विचारों की अपेक्षा राजा और पुरोहितों के साथ जुड़े हुए माने जाते थे। पिडमौंट को पूर्व क्रांतिकारियों और गणतंत्रवादियों के समर्थन को एक दिशा प्रदान करने के लिए पैलेविसिनो और ला फैरिना ने जुलाई 1857 में इतालवी राष्ट्रीय समिति की स्थापना की। यहां तक कि 1858 के आरंभ में गैरिबाल्डी ने भी ट्यूरिन के इशारे का इंतजार करना उचित समझा और राष्ट्रीय समिति में शामिल हो गया।

1859 में पिडमौंट और आस्ट्रिया के बीच युद्ध हुआ। 1858 में प्लोमबियर्स में नेपोलियन III के साथ हुए समझौते के अनुरूप फ्रांस ने इस युद्ध में पिडमौंट की सहायता की। हालांकि 1858 में विलाफ्रांका के शांति समझौते से निराश होकर कैवूर ने थोड़े समय के लिए पिडमौंट के प्रधानमंत्री के पद से इस्तिफा दे दिया था परंतु उसने मध्य इटली में भेजे गए आयुक्तों को वहीं रहने और पूर्व शासकों को पुनः बहाल किए जाने के खिलाफ जनमत तैयार करने की सलाह दी। अगस्त 1859 में कैवूर ने जनता को बधाई दी कि उन्होंने शासकों को वापस नहीं आने दिया और विदेशी शक्ति की सहायता लिए बिना स्वतंत्रता प्राप्त की। 1860 में फिर से प्रधानमंत्री बनने पर कैवूर ने मध्य इटली में अपने दूतों को आदेश दिया कि यूरोपीय मत को अपने पक्ष में करने के लिए वे यह दिखाने का प्रयत्न करें कि पिडमौंट के साथ मिलने की उनकी सभाओं के निर्णयों को जनता का समर्थन प्राप्त था। टुसकैनी, डची और लिशन को इटली में शामिल करने के बदले कैवूर फ्रांस को नाइस और सेवाय देने पर सहमत हो गया। कैवूर और नेपोलियन III के मत को इन क्षेत्रों में कराए गए मत संग्रह ने पुष्ट किया। हालांकि ये जनमत संग्रह नियंत्रित और नियोजित थे परंतु इसमें जन समर्थन प्राप्त करने में इतालवी राष्ट्रीय समाज की प्रमुख भूमिका थी। 1857 और 1862 के बीच इस समिति ने राष्ट्रीय समाचार पत्र प्रकाशित किया, स्वयंसेवक बहाल किए, मध्य इटली में क्रांतियां आयोजित की और उसके बाद जनमत संग्रह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गैरिबाल्डी नेपल्स अभियान और पोप के राज्यों में कैवूर के प्रवेश का आरोप इसी समाज पर लगाया गया। कोपा के अनुसार " इस प्रकार यह तय हो गया कि 1861 का राज्य उत्तरी होने की अपेक्षा राष्ट्रीय होगा।"

अपने गृह प्रांत नाइस को फ्रांस को सौंपे जाने के कारण हालांकि गैरिबाल्डी दुखी था परंतु सिसली और नेपल्स के अभियान में उसने कैवूर का साथ दिया। दक्षिण अभियान में सफलता प्राप्त कर जब वह रोम की ओर बढ़ा तो कैवूर ने उसे रोक दिया क्योंकि इससे नेपोलियन III से टकराना पडता और इसका प्रतिकूल अन्तरराष्ट्रीय प्रभाव पड़ता। नेपोलियन की सेनाओं से निपटने के लिए, जो अक्टूबर 1860 में कापुआ और गेएटा के किले में पीछे हट चुकीं थीं, गैरिबाल्डी ने खुद पिडमौंट के राजा से दक्षिण की ओर बढ़ने का अनुरोध किया। गैरिबाल्डी के स्वयंसेवकों की अभूतपूर्व सफलता के कारण कैवूर को सम्पूर्ण इटली को एकीकृत करने की प्रेरणा मिली; अभी तक उसने अपना ध्यान उत्तरी और मध्य इटली पर ही केंद्रित कर रखा था। एकीकरण की प्रक्रिया में राजा और कैवूर की सत्ता को चुनौती देने और जनता को एकजुट करने के लिए हालांकि कुछ गणतंत्रवादियों ने पहले ही दक्षिण में अभियान का मन बना रखा था परंतु 1860 से पहले यह उद्देश्य पूरा न हो सका। 1859 में बिना किसी सामूहिक खून खराबे के उत्तरी और मध्य इटली पर कब्जा जमा लिया गया परंतु 1860 में दक्षिण में सत्ता के हस्तांतरण में भारी हिंसा हुई।

गैरिबाल्डी के सिसली पहुंचने के पहले ही दक्षिण इटली में हिंसा भड़क उठी थी। यह हिंसा बोर्बोन सरकार, इसकी सम्पत्ति और कर्मचारियों के खिलाफ केन्द्रित थी। जैसे ही गैरिबाल्डी ने सिसिली पर अपना नियंत्रण स्थापित किया वैसे ही हिंसा की दिशा बदल गई। गैरिबाल्डी ने मैसिनेटो को समाप्त करने और भूमि सुधार का वादा किया परंतु इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा क्योंकि उसने वहां की सेना और बुर्जुआ वर्ग से समझौता कर रखा था। बुर्जुआ वर्ग के गैरिबाल्डी से मिल जाने के बाद किसानों और मजदूरों को किसी प्रकार के न्याय

मिलने या मांगों की पूर्ति होने की आशा न रही। इस प्रकार गैरिबाल्डी और राष्ट्रीय क्रांति के विरोध में सम्पदाओं पर आक्रमण किया गया और जमीन पर कब्जा जमाया गया। दक्षिण की मुख्य भूमि पर हालांकि बोर्बोन के खिलाफ कोई प्रमुख ग्रामीण आंदोलन नहीं हुआ था परंतु गैरिबाल्डी के बुर्जुआ सहयोगियों के खिलाफ विद्रोह हुए थे। छीनी गई सार्वजनिक भूमि की वापसी की मांग करते हुए किसानों ने नए शासन के खिलाफ दक्षिणी शहर मातेरा में दंगा कर दिया। बैसीलीकाटा में नए शासन से निराश हुए समुदायों ने एकीकरण के लिए हो रहे मत संग्रह के खिलाफ दंगा कर दिया, राष्ट्रीय सैनिकों पर आक्रमण किया, अपदस्थ बोर्बोन राजा के प्रति समर्थन की घोषणा की और सैनिक दस्ते का विरोध किया। बोर्बोन राजाओं के खिलाफ लामबंद किए गए समूहों ने नए शासन का हिंसात्मक विरोध किया क्योंकि उनके हितों का नुकसान हो रहा था। अतः सत्ता के हस्तांतरण के बाद हिंसात्मक टकराव पहले से भी ज्यादा हो गया। ऐसा प्रतीत होता था कि पार्टी ऑफ ऐक्शन पर कई मायनों में पिडमौंट के राजा का नियंत्रण था। 1861 में इतालवी राष्ट्र-राज्य के निर्माण के बाद अन्य गणतंत्रवादियों के साथ यहां तक कि गैरिबाल्डी और मेजिनी को भी दरकिनार कर दिया गया।

जहां तक इटली के एकीकरण का सवाल है, वेनेशिया और रोम का प्रश्न ज्यों का त्यों बना रहा। संभवतः नेपोलियन III के कहने से बैंकर इसाक पेरेरे ने यह प्रस्ताव रखा था कि 1860 के अंत तक आस्ट्रिया इटली को वेनेशिया बेच देगा। हर्जाने के तौर पर आस्ट्रिया तुर्की से बोसनिया-हर्जेगोबिना खरीद सकता था। कुछ वर्षों बाद इटली के प्रधानमंत्री ला मारमोरा ने 100,000,000 लीरा में वेनिस खरीदने का प्रस्ताव रखा था परंतु आस्ट्रिया ने एक बार फिर इनकार कर दिया। 1866 में आस्ट्रिया के साथ हुए युद्ध में इटली ने प्रशा का साथ दिया परंतु इटली की सैन्य शक्ति बहुत कारगर नहीं सिद्ध हुई क्योंकि जनमत संग्रह में संघ के पक्ष में जबरदस्त मतदान के बाद वेनिस को इटली में शामिल कर लिया गया। हालांकि 1866 के युद्ध के दौरान किसी भी शहर में विद्रोह नहीं हुआ और वेनिस के थोड़े लोग ही गैरिबाल्डी के स्वयं सेवकों में शामिल हुए। रोम पर कब्जा जमाए जाने के कई असफल प्रयत्न हुए जिनमें सबसे महत्वपूर्ण प्रयत्न 1867 में गैरिबाल्डी ने किया था। सितम्बर 1870 में एक संक्षिप्त युद्ध के बाद इसे मिला लिया गया। इटली का एकीकरण हो गया परंतु 19वीं शताब्दी के अंत में जाकर इसकी उपलब्धियां सामने आईं।

बोध प्रश्न 2

1) इटली के राष्ट्रवाद के सांस्कृतिक आधार के बारे में 100 शब्द लिखिए।

....

....

....

....

....

2) इटली के एकीकरण में जन आंदोलनों का क्या योगदान था ? 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

18.7 सारांश

जर्मनी और इटली दोनों ही 19वीं शताब्दी में राष्ट्र-राज्य के रूप में उभरे। दोनों ही मामलों में राष्ट्रवाद के विचार किसी न किसी रूप में काफी पहले से मौजूद थे। परंतु राष्ट्र-राज्यों का वास्तविक विकास 19वीं शताब्दी में ही जाकर हो सका। जर्मनी और इटली में एकीकरण की प्रक्रिया अलग-अलग थी। जहां जर्मनी में काफी ऊंचे स्तर की आर्थिक और राजनैतिक एकता हासिल की गई वहीं इटली में मुख्यतः राजनीतिक और सांस्कृतिक स्तर पर एकीकरण हुआ। तुलनात्मक दृष्टि से इटली में आर्थिक एकता काफी कमजोर थी। जर्मनी की एकता ऊपर से आरोपित की गई परंतु इटली में जन आंदोलनों ने भी प्रमुख भूमिका निभाई। इनके अलावा चाहे या अनचाहे युद्ध ने भी भूमिका निभाई और लोगों को एक सूत्र में बांधने के लिए प्रेरित किया तथा राष्ट्र-निर्माण में मदद की।

18.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए उपभाग 18.2.2

2) देखिए उपभाग 18.2.3

3) देखिए उपभाग 18.2.5

बोध प्रश्न 2

1) देखिए भाग 18.3

2) देखिए भाग 18.6